ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

नागार्जुन के उपन्यास में स्त्री-चेतना

कंचन रजक

(शोधार्थी)

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

शोधसार :–

जनवादी नागार्जुन स्वतंत्र भारत के प्रमुख उपन्यासकारों में से एक हैं, जिन्होंने प्रेमचंद की औपन्यासिक परंपरा को न केवल पुनर्जीवित किया, बल्कि उसे नए सामाजिक और वैचारिक आयाम भी प्रदान किए। उन्होंने अपने उपन्यासों में विशेष रूप से उन अंचलों के जीवन को चित्रित किया, जो आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए थे। बिहार के मिथिलांचल के ग्रामीण जीवन को उन्होंने अपनी कथा-भूमि बनाया, जहाँ के जनजीवन, संघर्ष और यथार्थ को उन्होंने सजीव रूप में प्रस्तुत किया। नागार्जुन के उपन्यासों के पात्र और परिवेश मुख्यतः ग्रामीण जीवन से जुड़े हैं। विशेष रूप से उनके स्त्री-पात्र ग्रामीण पृष्ठभूमि में गढ़े गए हैं, किंतु उनकी विचारधारा प्रगतिशील और प्रयोगशील है। ये स्त्रियाँ परंपरागत बंधनों को चुनौती देती हुई एक नए सामाजिक चेतना का परिचय देती हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'रतिनाथ की चाची', 'नई पौध', 'वरुण के बेटे', 'कुंभीपाक' और 'उग्रतारा' विशेष उल्लेखनीय हैं।

बीजशब्द:- जनवादी, स्त्री चेतना, जनजीवन, ग्रामीण,

मूल आलेख:- जनवादी चेतना के सशक्त रचनाकार नागार्जुन के उपन्यासों की पृष्ठभूमि को केंद्र में रखते हुए डॉ. रामचंद्र तिवारी का मत है कि—**"नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में विविध जीवन संदर्भों को केंद्र में रखकर मिथिलांचल की सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्र अंकित किया है। वैसे, उनके उपन्यासों ने आंचलिकता का अतिक्रमण किया है। उनके सामने मिथिला अंचल का सांस्कृतिक परिदृश्य आवश्यक है, किंतु उनका लक्ष्य ग्रामीण जनता के शोषण और उसके स्रोतों को उजागर करना है। उनके शोषत पात्र अपने वर्ग-शत्रु को पहचानते हैं और उनसे संघर्ष करते हैं। नागार्जुन का लक्ष्य मिथिला अंचल को सामने रखकर पूरे देश के ग्रामीण समाज की दुर्दशा तथा सामाजिक अंतरविरोधों को मूर्त करना है।"**[1]नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की विविध सामाजिक समस्याओं के साथ ग्रामीण स्त्रियों के संघर्षों को अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

नागार्जुन का पहला उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' सन् 1949 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास मिथिलांचल की विधवा स्त्रियों की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण करता है। उपन्यास की प्रमुख पात्र गौरी एक विधवा स्त्री है, जिसके माध्यम से उस समय के समाज में विधवाओं की उपेक्षित और पीड़ित स्थिति उजागर होती है। समाज विधवा स्त्रियों को मानो अभिशप्त मानकर उनके साथ अमानवीय व्यवहार करता है, और गौरी भी इसी सामाजिक दृष्टि का शिकार बनती है। गौरी का वैधव्य जीवन उसके देवर जयनाथ द्वारा खंडित कर दिया जाता है, जिससे वह गर्भवती हो जाती है। उसकी साहसी माँ उसे इस संकट से उबारती है, किंतु इसके परिणामस्वरूप गौरी को जीवनभर परिवार और समाज की उपेक्षा तथा प्रताड़ना सहनी पड़ती है। यहाँ तक कि उसका अपना पुत्र भी उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में रतिनाथ (जयनाथ का पुत्र) ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा बनता है।

गौरी एक जगह क्षुद्र पुरुष को जवाब देती है कि **"किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग नहीं मिला। पुरुष को अमृत पिलाकर स्वयं वह विषपान ही करती आई है।"**[2]गौरी का चरित्र अत्यंत संयमी, सहनशील और मानवीय है। वह अपने जीवन को एक तपस्विनी की भाँति जीती है और अंततः उसके संघर्षों का अंत उसकी मृत्यु के साथ ही होता है। नागार्जुन ने इस उपन्यास के माध्यम से विधवा जीवन की त्रासदी, सामाजिक विसंगतियों तथा मानवीय कमजोरियों को अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया है।

गौरी का यह कथन— **"हे भगवान! अगले जन्म में मैं भले चिड़िया या नेवला बनूँ, पर इस चेतनामय मानव समाज में फिर कभी जन्म न लूँ।"**[3]यह कथन समाज पर एक तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करता है। यह कथन उसके मानसिक और सामाजिक उत्पीड़न की पराकाष्ठा को दर्शाता है। यद्यपि गौरी में सामाजिक परंपराओं और कुप्रथाओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष विद्रोह करने का साहस नहीं दिखाई देता, फिर भी उसका चरित्र स्वाभाविक, करुणाजनक और हृदयस्पर्शी है। वह अपनी पीड़ा को सहते हुए भी जयनाथ के नाम को कलंकित नहीं करती, जो उसकी सहनशीलता और अंतर्निहित मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता है। इस प्रकार, गौरी के माध्यम से विधवा जीवन का कठोर यथार्थ अत्यंत प्रभावी रूप में सामने आता है।

सन् 1953 में प्रकाशित 'नई पौध' उपन्यास मिथिला के पाँचवें-छठे दशक के ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में उस समय की सामाजिक कुरीतियों—विशेषतः गरीबी के कारण कन्याओं के विक्रय अथवा उनका अधेड़ पुरुषों से अनमेल विवाह—की समस्या को उभारा गया है। उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र बिसेसरी है, जो खोखा पंडित की नतिनी है। खोखा पंडित अपनी चौदह वर्षीय नतिनी का विवाह चतुरानन चौधरी नामक एक वृद्ध, संपन्न

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

व्यक्ति से करना चाहता है। किंतु गाँव के कुछ जागरूक और प्रगतिशील युवक इस अनमेल विवाह का विरोध करते हैं। वे केवल विरोध ही नहीं करते, बल्कि दूल्हे को गाँव छोड़ने के लिए बाध्य भी कर देते हैं।

बिसेसरी स्वयं भी इस स्थिति से परिचित है और समझती है कि इस अन्यायपूर्ण विवाह से बचने के लिए उसे साहसिक कदम उठाना होगा। वह सामाजिक दबावों और पारिवारिक निर्णयों के विरुद्ध खड़ी होती है। अंततः युवक वाचस्पति झा—जो प्रगतिशील विचारों का प्रतिनिधि है—बिसेसरी से विवाह करने के लिए तैयार होता है। दिगंबर वाचस्पति को समझता है कि **"बिसेसरी बड़ी समझदार और बहादुर लड़की है बोझ बनकर तुम्हारी गर्दन नहीं तोड़ेगी। साथ रहे रखोगे और माकूल ट्रेनिंग दोगे तो अच्छी से अच्छी साचिन बनेगी।"**[4] धैर्य और साहस के बल पर बिससेरी अपनी मनपसंद जीवनसाथी प्राप्त करती है। नागार्जुन बिसेसरी को आजाद भारत की बहादुर लड़की के रूप में पेश हैं। उसमें आत्मविश्वास है। उसका व्यक्तित्व स्वतंत्र है। व बिसेसरी प्रगतिशील विचारों वाली लड़की है। अनमेल विवाह का विरोध करती है। आजाद भारत नई पीढ़ी के स्त्रियाँ लिए बिसेसरी आशा की एक किरण बनती है।इस प्रकार, 'नई पौध' में नागार्जुन ने न केवल अनमेल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति का विरोध किया है, बल्कि नई पीढ़ी की जागरूकता, साहस और परिवर्तनकारी चेतना को भी प्रभावी रूप में अभिव्यक्त किया है।

आलोचक गोपाल राय ने नागार्जुन के उपन्यासों में निहित स्त्री-चेतना को निम्नलिखित रुप में रेखांकित किया है- **"नागार्जुन के सामने मिथिला का सामाजिक रूढ़ियों में बुरी तरह जकड़ा हुआ समाज था, जहां विधवाओं को जीवित मृत होने की पीड़ा भुगतनी पड़ती थी, जहां आठ-दस वर्ष की बालिकाओं का विवाह साठ-पैंसठ वर्ष के बूढ़ों से कर दिया जाता था, जहां कुलीनता के नाम पर एक व्यक्ति से दर्जनों कन्याएं ब्याह दी जाती थीं, जिसके चलते या तो विवाहित युवतियां घोर यातना का जीवन व्यतीत करती थीं अथवा व्यभिचार के लिए बाध्य होती थीं। रतिनाथ की चाची तथा नई पौधे में नारी शोषण की समस्या को नागार्जुन ने गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है।"**[5]

नागार्जुन जी की स्त्री चरित्र के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं एक परंपरागत सामाजिक संस्कृति रुढ़ियों को दोती और पिसती शोषित स्त्री है तो दूसरी तरफ इस प्रकार के परंपरा को विरोध करने वाली स्त्री। जिसमें गौरी (रतिनाथ की चाची) को मान सकते हैं वहीं दूसरी तरफ इस परिवेश का विरोध करने वाली स्त्री बिसलेरी। बिससेरी गौरी की तरह अपमान और शोषित जीवन नहीं जीना चाहती है। बिससेरी आजाद भारत की आजाद ख्यालों वाली की लड़की है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

'वरुण के बेटे' उपन्यास में माधुरी भी बिसेसरी की भाँति एक युवा, जागरूक और क्रांतिकारी स्त्री पात्र के रूप में उभरती है। यह उपन्यास गढ़पोखर पर आश्रित मछुआरों के कठिन जीवन-संघर्षों का अत्यंत यथार्थ चित्रण करता है। जमींदार, सरकारी तंत्र की सहायता से गढ़पोखर पर अधिकार करने का षड्यंत्र रचते हैं, जिसके प्रतिरोध में मछुआ संघ का गठन होता है। यह संघ अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संगठित संघर्ष करता है। माधुरी इस संघर्षशील परिवेश की प्रतिनिधि स्त्री है। वह अपने व्यक्तिगत प्रेम से ऊपर उठकर सामाजिक दायित्व को प्राथमिकता देती है और पितृसत्तात्मक संरचना के भीतर रहते हुए भी नैतिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करती है। अपने प्रेमी मंगल से अंतिम भेंट में वह कहती है— "**देखो मंगल, अब हम छोकरा-छोकरी नहीं रहे। धूल-मिट्टी के बचकानी खेल काफी खेल चुके हैं। सयानी समझकर मां-बाप और सास ससुर ने तुम पर जो जिम्मेदारी सौंपी है। उसे जी चुराना कायरता होगी। तुम्हें अपनी घरवाली के प्रति वफादार होना है, और मुझे अपने घरवालों के प्रति।**"[6] इस कथन में माधुरी का विवेक, संयम और कर्तव्यबोध स्पष्ट झलकता है।

माधुरी केवल परंपराओं का निर्वाह करने वाली स्त्री नहीं है; वह अन्याय के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक खड़ी भी होती है। अपने ससुराल में नशाखोर ससुर और पति के अत्याचारपूर्ण वातावरण को वह स्वीकार नहीं करती और स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वहाँ से लौट आती है। यह उसका आत्मसम्मान और स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रमाण है। इसके पश्चात माधुरी अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित करती है और सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाती है। वह बाढ़-पीड़ितों की सहायता हेतु शिविरों में कार्य करती है तथा पूरे समर्पण के साथ जनसेवा में संलग्न रहती है। अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता के कारण उसे जेल भी जाना पड़ता है।

इस प्रकार माधुरी एक विचारशील, साहसी और आत्मसम्मान से परिपूर्ण स्त्री के रूप में सामने आती है। वह प्रेम करती है, किन्तु उसे सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर रखकर नहीं देखती। उसके भीतर व्यक्तिगत संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन है। नागार्जुन ने माधुरी के माध्यम से मछुआरे समाज की सशक्त, जागरूक और संघर्षशील स्त्री का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

नागार्जुन वस्तुतः नई पीढ़ी की स्त्री को दृढ़ चरित्र वाली साहसी सक्रिय स्त्री के रूप में देखते हैं । नागार्जुन गौरी के समान स्त्री को परंपरागत रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक बंधनों में जकड़ी हुई नहीं रहे। इसीलिए नागार्जुन ने मधुरी और बिससेरी जैसे स्त्री पात्रों का सृजन किये जो आत्म गौरव

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

से परिपूर्ण है। समाज में कार्यरत रहती है। पुरुष मानसिकता को ठुकराती है। प्रगतिशील विचारों के साथ अपना भविष्य स्वयं निर्धारित करती है।

सन 1960 में प्रकाशित "कुंभीपाक" उपन्यास जिसमें नगरों महानगरों एवं निम्न मध्य वर्ग समाज में अनेक प्रकार के शोषण के शिकार होती स्त्री की नरकीय की त्रासदी का वर्णन है। परिस्थिति और परिवेश का शिकार बनाकर पुरुष जाति द्वारा शोषित होती है। चंपा और इंदिरा को नर्क से बाहर निकाल कर मुक्ति दिलाने का काम करने वाली निर्मला इस उपन्यास की नायिका है। चंपा इंदिरा और निर्मला एक ही मकान में रहते हैं। चंपा शर्मा की आश्रित है। इंदिरा चंपा की आश्रित है। शर्मा और चंपा लड़कियां बेचने का धंधा करते है। यही चंपा इंदिरा को किसी आदमी को बेचने की योजना बनाती है। निर्मल इंदिरा को इस नरक से निकलकर अपने मौसेरे भाई के पास भेज देती है। इस प्रकार निर्मला इंदिरा को कुंभी पाक नरक से बाहर निकाल कर इंदिरा को नया जीवन प्रदान करती है। पत्र के अंत में निर्मला अपने भाई सदानंद को लिखती है- **"लड़कियों और औरतों की खरीद बिक्री जिनका धंधा था ऐसे ही एक रक्षास के चंगुल से आपकी छोटी बहन इंदिरा को छुड़ा लाई है।"**[7]इंदिरा और चंपा के जीवन में परिवर्तन निर्मला के कारण ही होता है। निर्मल अपने प्रगतिशील विचारों के कारण ऐसी स्त्रियों की कुंभीपार्क के दलदल से निकलकर उसे नया जीवन देती है। निर्मला एक प्रयत्नशील और प्रगतीवादी स्त्री का परिचय देती है।

सन् 1963 में प्रकाशित नागार्जुन का उपन्यास 'उग्रतारा' बाल-विधवा समस्या पर केंद्रित एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इस उपन्यास में 'उगनी' के माध्यम से लेखक ने एक विवश स्त्री के अंतर्मन की करुणा, उसके प्रेम और जीवन-संघर्ष को अत्यंत संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया है। रुढ़िग्रस्त सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं के कारण उगनी और कामेश्वर को अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, यहाँ तक कि उन्हें जेल तक जाना पड़ता है।

इन विषम परिस्थितियों के बावजूद उगनी साहस, धैर्य और आत्मबल का परिचय देती है। उसका चरित्र केवल पीड़ा सहने वाला नहीं, बल्कि संघर्ष के माध्यम से अपने अस्तित्व को स्थापित करने वाला है। भभीखन सिंह द्वारा शोषित होकर गर्भवती होने के बाद भी उगनी अपने जीवन से समझौता नहीं करती; वह अपने प्रेमी कामेश्वर के साथ विवाह करके सामाजिक रुढ़ियों को चुनौती देती है।

उगनी का व्यक्तित्व परिवर्तनशील चेतना का प्रतीक है। वह न तो वैधव्य के निष्क्रिय और पीड़ादायक जीवन को स्वीकार करती है, और न ही अनमेल विवाह जैसी कुप्रथा को मान्यता देती है। अपने स्वतंत्र विचार और दृढ़ निश्चय के बल पर वह अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

करती है। इस प्रकार उगनी एक ऐसी स्त्री के रूप में सामने आती है, जो परंपराओं के बंधनों को तोड़कर अपने अधिकार और अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है।

नागार्जुन ने उगनी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि स्त्री केवल करुणा की प्रतीक नहीं, बल्कि परिवर्तन और प्रतिरोध की भी सशक्त वाहक है। उगनी का चरित्र नई चेतना, आत्मसम्मान और प्रगतिशील विचारधारा से अनुप्राणित है, जो उसे एक क्रांतिकारी और प्रेरणादायी स्त्री पात्र के रूप में स्थापित करता है।

निष्कर्ष:- इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जनवादी चेतना के प्रखर कवि-उपन्यासकार नागार्जुन के उपन्यासों में गौरी से लेकर उगली तक सभी स्त्री पात्र स्वतंत्र और सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आते हैं। ग्रामीण परिवेश से संबद्ध होने के बावजूद ये स्त्रियाँ परंपरागत रुढ़ियों, कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध सजग प्रतिरोध दर्ज कराती हैं। इनके भीतर गहरे स्तर पर आशा और संघर्ष का संतुलित भाव विद्यमान है; यही कारण है कि वे उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा में वर्तमान की पीड़ा और यातनाओं को सहन करने की क्षमता रखती हैं। "वरुण की बेट' की माधुरी सामाजिक दायित्वों का बोध कराते हुए मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करती है, वहीं 'नई पौध' की बिसेसरी युवक मंडल से जुड़कर अपने अस्तित्व और भविष्य की रक्षा का मार्ग प्रशस्त करती है। 'कुंभीपाक' की निर्मला सामान्य नारी होते हुए भी अन्य स्त्रियों के उद्धार के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि नागार्जुन का स्त्री-दृष्टिकोण संतुलित, संवेदनशील और स्वस्थ मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित है। नागार्जुन के स्त्री पात्रों का विकास जीवन की ठोस यथार्थभूमि पर हुआ है, जहाँ वे केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक बनकर सामने आती हैं। इस प्रकार, उनकी स्त्रियाँ ग्रामीण जीवन से जुड़ी होते हुए भी प्रगतिशील चेतना और आत्मनिर्भरता की सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य-सहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 269
2. नागार्जुन, रतिनाथ की चाची, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 96
3. वही, पृ. 40
4. नागार्जुन, नये पौधे, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 45
5. प्र.सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, स्वाधीनता भारत का हिंदी साहित्य भाग-पहला, साहित्य अकादमी प्रकाशक, पृ. 274,275

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

6. नागार्जुन, वरूण के बेटे, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 45
7. नागार्जुन, कुम्भीपाक, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 66
8. नागार्जुन, उग्रतारा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली।

© Copyright @ Authors